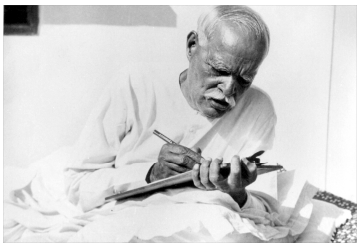

आदि पिता का पत्र

प्रिय वत्स .....

कितना समय हुआ! पूरा 80 वर्ष हो गये, जानीजाननहार, त्रिलोकीनाथ, त्रिकालदर्शी, दयानिधान प्रभू तुम्हारी दशा और दिशा देख सचेत करते आ रहे हैं कि बच्चे आलस्य और अलबेलेपन में आकर कितना समय तुम्हारे हाथ से निकलता जा रहा है,और समय भी तुम्हें चेतावनी दे रहा है, तुम्हें शायद इसका जरा भी एहसास नहीं, कि आने वाले समय में प्रकृति अपना ताण्डव नृत्य शुरू करने वाली है, परिस्थितियाँ प्रचण्ड प्रकोप लेकर आ रही हैं, समस्याएं सुनामी की बाढ़ जैसी आने वाली हैं, धार्मिक उन्माद असहनीय विनाश लीला में परिवर्तन होता जायेगा, विज्ञान अपने विध्वांशात्मक रूप में प्रकट होने वाला है, भटकती रूहें जीना मुश्किल करने वाली हैं, ये संसार बस समझो अब अपनी अंतिम श्वाँसें ही गिन रहा है, अपनी तैयारी कर लो, पर हमें लगता है कि तुम अभी तक इशारों को समझ ही नहीं पाये हो, इसलिये आज मैं तुम्हें ये पत्र साफ–साफ लिख रहा हूँ, कि तुमने तो डायरेक्ट भगवान की गोद भी ली है, इतनी गूढ़ ज्ञान अव्यक्तवाणियाँ भी तुम्हें पढ़ने को मिली व सुनी, भगवान से टोली वा वरदान भी कितने लिए, तुम्हें इतना रिफाइन ज्ञान और इतने आधुनिक साधन मिले हैं, कि बटन दबाते ही पूरा ज्ञान क्लीयर आ जाता है, और हमारे को तो बाबा को अपना रथ उधार पर देने के कारण पुरूषार्थ का ना ही कोई निश्चित समय मिलता था ना ही अधिक समय मिला, तुम्हें तो 24 घण्टे पुरूषार्थ करने के लिए अपना शरीर है और ना ही अब संसार के साथ सगे संबंधियों का आपोजीशन रहा,नया ज्ञान होने के कारण जो पहले अनेक भ्रान्तियों थी वह भी लगभग सारी समाप्त हो गयी हैं और धर्मीय आक्रोश भी अब नहीं रहा, हमें तो ऊपर वाले बाबा ने कहा कि मैं यहाँ अकेला कब तक रहूँगा? अभी तुम अपना सब काम समेटकर जल्दी ही इधर मेरे पास आ जाओ, और मैं जल्दी–जल्दी तैयारी

कर उनकी आज्ञा सिर माथे मानकर चल दिया उनके साथ, सोचो आज पूरे 48 वर्ष हो गये और मैं यहाँ तैयार होकर बैठा हूँ सोचता हूँ कि वहाँ से तो मैं जल्दी लोगों को छोड़कर आ गया, पर यहाँ से स्वर्ग में आप लोगों के बिना जाने का मन नहीं कर रहा, इसलिए यहाँ बैठ तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ, मुझे तुमसे बहुत प्यार है, इसलिए मैं स्वर्ग का गेट अकेले नहीं खोलना चाहता, तुम सब मेरे साथ ही स्वर्ग में चलो, इसलिए मैं बार–2 शिवबाबा के साथ तुम्हारी तैयारी तीव्र कराने आता हूँ । मैं इस रावण राज्य का साक्षी हूँ, कि यहाँ तुम लोगों ने अथाह दुख देखे हैं अब अन्त में भी तुम्हें पश्चाताप और धर्मराज के आगे भी सजा न खानी पड़े, इसलिए मैं तुम्हें ये पत्र अपनी तरफ से लिख रहा हूँ, कि बच्चे अब समय बिल्कुल नहीं हैं, माया की चकाचौंध में मत फँसो, वक्त की आवाज सुनो, भगवान का इशारा समझो, अपने पुरूषार्थ को देखो, अपने अन्तःकरण में झाँको, चुनौतियों की चेतावनी को पहचानो, आलस्य के स्वीट प्वॉइजन को परखो, निकलो अलबेलाई के दलदल से, उठो दिलशिकस्ती के दरबान से, उतार फेंको मजबूरियों का लबादा, करो शक्तियों की ललकार, दिखाओ हिम्मत का आगाज, उठाओ बुलन्दी की आवाज, सुना दो सूरमाँओ का राज, तुम वो कर सकते हो जो आज तक असंभव रहा, तुम वो बन सकते हो जो संसार का सबसे ऊँचा पद है, तुम्हें वो लाना है जिसके लिए संसार तुम पर नजरें टिकाये है, इसलिए उठो.....मैं तुम्हारा इन्तजार कर रहा हूँ.....। मेरे नूर–ए– रत्न, नूर–ए–चश्म क्या तुम मेरी बात नहीं मानोगे ?

तुम्हारी प्रतीक्षा में

तुम्हारा भाग्य विधाता पिता

प्रजापिता ब्रह्मा

18.01.17